पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियां

संकलन एवं संपादन
रमणिका गुप्ता

308
9-CL
54

अनुक्रम

संपादकीय *सात*

अरुणाचल प्रदेश *(शेरदुकपेन)*

- आईना *(शेरदुकपेन)*—येशे दोर्जी थोंगची/अनु.—प्रमोद कुमार तिवारी 1
- सड़क की यात्रा—ममंग देई *(आदी)*/अनु.—दिनेश अग्रहरि 7

असम *(बोड़ो)*

- जंगल की आग—डॉ. मंगल सिंह हाजोवारी/अनु.—सुधी राजीव 14
- एक पैसा—मधुराम बोरो/अनु.—चेरी ब्रह्म 22
- बांझ—रामदास बोरो/अनु.—रिपुरमणलाल दास 26
- वापसी—रमाकांत बसुमतारी/अनु.—खगेश्वर बोरो 30
- बीते हुए दिन—मुकुट प्रसाद बोरो/अनु.—खगेश्वर बोरो
  पुनरीक्षण—सुरेश सलिल 35
- द्वारेन की मां स्वर्ग सिधार गई—स्वर्ण प्रभा चैनारी/अनु.—अक़ील क़ैस 39

असम *(कार्बी)*

- डर (काफेरे)—प्रो. रोंगबोंग तेरांग/अनु.-थेसो क्रॉपी, पुनरीक्षण : रमणिका गुप्ता 44
- अमावस की रात—सेमसोन सिंह हांसे/अनु.—थेसो क्रॉपी
  पुनरीक्षण : रमणिका गुप्ता 48
- शिक्षक—सर बिदोर सिंह क्रो/अनु.—थेसो क्रॉपी, पुनरीक्षण : रमणिका गुप्ता 53
- भोर—खोर सिंह इंग्ती/अनु.—थेसो क्रॉपी, पुनरीक्षण : रमणिका गुप्ता 57
- संघर्ष—विद्या सिंह रोंग्पी/अनु.—थेसो क्रॉपी, पुनरीक्षण : रमणिका गुप्ता 61
- मुर्ग़ी—(वीपी)—हांग मिजी हानसे/अनु.—थेसो क्रॉपी
  पुनरीक्षण : रमणिका गुप्ता 67

असम *(तीवा)*

- वे तीनों और वह—राजेन्द्र नाथ बरदलै/अनु.—डॉ. महेन्द्र नाथ दुबे 73

मणिपुर *(मैतेई)*

- रंग अबीर का पड़ा फीका—एच.इबोमचा/अनु.—अक़ील क़ैस 82

मिज़ोरम *(मिजो)*

- काउबॉय लाबेले जीन्स—ख्वालकुंगी/अनु.—अक़ील क़ैस 85
- निराशा के उस पार—वान्नेइहत्लुअंगा/अनु.—वी.आर. राल्ते
  पुनरीक्षण : रमणिका गुप्ता 92

मेघालय *(खासी)*

- मिस्टर के.—डेज़्मंड खारमाओफ्लांग/अनु.—अक़ील क़ैस 104
- सूर्यास्त—एच. इलियास/अनु.—अक़ील क़ैस 114
- कठ-बाप—बिजोया सावियान/अनु.—अक़ील क़ैस 119

नागालैंड *(टैनिडे)*

- भूमि पुत्र—सिबैस्टियन जुमवू/अुन.—अक़ील क़ैस 129
- जड़ें—नेचुरियाज़ो चुचा/अनु.—अक़ील क़ैस 145

त्रिपुरा *(कोकबोरोक)*

- शिउली की सुगंध—स्नेहमय राय चौधुरी/अनु.—अक़ील क़ैस 149

सिक्किम *(लेपचा)*

- मेरे मन मंदिर की स्वर्ण-दीपशिखा-एन.टी. लेपचा
  पुनरीक्षण : रमणिका गुप्ता 153
- फ़गोरिप और तम्बम—दोर्जी श्रिंग लेपचा/पुनरीक्षण : रमणिका गुप्ता 157

लेखक-परिचय 161

अनुवादकों का नाम व पता 166

आईना

येशे दोर्जी थोंगची

अनु. : **प्रमोद कुमार तिवारी**

जल्द ही यह ख़बर गांवों में जंगल की आग की तरह फैल गई। देखते-देखते मण्डाला गांव के नए स्कूल के मास्टर बाबू के यहां केवल नज़दीक के गावों से ही नहीं बल्कि दूर-दराज़ गांवों से भी बूढ़े, जवान आदमी और औरतों के झुण्ड पहुंचने लगे। पहाड़ी क्षेत्र के पूर्वी टोलों व छोटे गांवों में सबकी ज़ुबान पर केवल वह अनोखी वस्तु—मास्टर बाबू का दर्पण ही चर्चा का विषय बन गई थी। गांव वालों ने इसके पहले कभी भी ऐसी वस्तु नहीं देखी थी, जिसमें आप अपने चेहरे, हाथ और शरीर के अन्य भागों को देख सकते हैं।

सबसे पहले **दोर जेरींग** की विधवा मां **लेदन** ने इस अनोखी वस्तु को मास्टर बाबू के घर की दीवार पर देखा। दरअसल उसका लड़का **दोर जेरींग** बीमारी के कारण स्कूल जाने में असमर्थ था। **लेदन** को अपने बेटे की छुट्टी मांगने के लिए मास्टर बाबू के घर जाना था। उसने गांव के मुखिया **गाओन बुराह** (गांव-बूढ़े) को अपने साथ लिया क्योंकि वह मास्टर बाबू की भाषा नहीं जानती थी।

जब **गाओन बुराह** (गांव-बूढ़े) मास्टर बाबू से बात कर रहा था, **लेदन** ने एक अजनबी को देखा, एक अधेड़ उम्र औरत, पास वाले कमरे से उसे घूर रही थी। पहले तो **लेदन** ने यह सोचकर कि वह औरत मास्टर बाबू की पत्नी हो सकती है, अपनी नज़र उस दिशा से फेर ली। लेकिन शीघ्र ही **लेदन** ने अनुभव किया कि वह औरत अधेड़ उम्र की थी और उसकी तरह एक फटा हुआ **सिन्कू** (लम्बा गोनी) पहने हुए थी और गन्दी एवं अस्त-व्यस्त थी।

लेदन ने सोचा कि वह अधेड़ औरत युवा मास्टर बाबू की पत्नी नहीं हो सकती। अगर उनकी शादी हुई भी होती तो उनकी पत्नी को जवान, ख़ूबसूरत और अच्छे कपड़ों में होना चाहिए था। तब वह औरत कौन हो सकती है, जो जब भी मैं उस दिशा में देखती हूं तो मुझे घूरती है? हां, निश्चय ही वह हम में से एक है। अगर मैं उससे बात करके थोड़ी भी शिष्टता का परिचय नहीं देती हूं, तो यह अनैतिक होगा।

लेदन ने अपना मुंह खोला लेकिन आश्चर्य कि उस औरत ने भी अपना मुंह खोला और जब **लेदन** ने बिना एक शब्द बोले अपना मुंह बन्द कर लिया तो उस औरत ने भी अपना मुंह बन्द कर लिया। **लेदन** ने अपना हाथ उठाया और उस औरत ने भी वही किया। वह यह देखकर दंग रह गई कि वह औरत उसकी तरह ही ठीक वही पोशाक, चूड़ी और माला पहने हुए है और लेदन ने जो भी किया, दूसरी औरत ने भी तुरन्त उसकी नक़ल कर ली।

मास्टर बाबू ने उसकी दशा पर ध्यान दिया और मुस्कुराते हुए दर्पण को दीवार से उतार कर ले आए। उन्होंने **लेदन** के सामने दर्पण को पकड़ लिया। महान आश्चर्य! **लेदन** ने उस अजनबी औरत को अपने बिल्कुल नज़दीक खड़े देखा।

आश्चर्य से उसने अपनी हथेली को मुंह पर रख लिया और अजनबी ने भी वही किया। **गाओन बुराह** (गांव-बूढ़ा) उसकी बग़ल में आ गया और तुरन्त बिल्कुल **गाओन बुराह** (गांव-बूढ़ा) की तरह का एक आदमी उस अनोखी वस्तु में प्रकट हो गया। उसके बाद मास्टर बाबू ने दर्पण का पीछे वाला भाग उनकी तरफ करके घुमा दिया और तुरन्त दोनों आदमी और औरत उसमें से ग़ायब हो गए। उन व्यक्तियों को अचानक ग़ायब हुआ देखकर उसके रोंगटे खड़े हो गए।

लेदन ने सोचा निश्चय ही ये लोग इस घर में छिपे हुए दुष्ट भूत हैं, जो इस वस्तु में दिखाई देते हैं।

"इसे दर्पण कहते हैं। इसमें तुम अपना प्रतिबिम्ब देख सकते हो।" मास्टर बाबू ने **गाओन बुराह** (गांव-बूढ़े) को समझाया, जिसने बाद में इस बात को **लेदन** को समझाया।

गांव वापस जाते हुए सभी राहगीरों को **लेदन** और **गांव बूढ़ा** ने उस अनोखी वस्तु के बारे में बताया, जिसे उन्होंने मास्टर बाबू के घर पर देखा था। इस दूरवर्ती पहाड़ी गांव के आदिवासियों ने कभी भी अपने गांव की सीमा से बाहर जाने का साहस नहीं किया था, अतः उनमें से किसी ने भी ऐसी वस्तु की कल्पना नहीं की थी, जहां आप अपना प्रतिबिम्ब साफ पानी की तरह बल्कि और अच्छे तरीके से देख सकते हैं।

सबसे पहले बोमडिला के राजनीतिक अधिकारी **बोर साहब** जो कभी नेफ़ा के जिलाधीश थे, ने नेफ़ा के आन्तरिक क्षेत्रों के मण्डाला गांव की यात्रा की थी और पाया था कि एक विशाल जनसंख्या वाला यह गांव एक प्राइमरी विद्यालय स्थापित करने के लिए बहुत ही उपयुक्त है।

अपने दौरे पर बोर साहब ने अपनी ओर से गांव के प्रशासन को चलाने के लिए **गाओन बुराह** (गांव-बूढ़े) को गांव का मुखिया नियुक्त किया और श्रमदान सहयोग के

आधार पर उसे दो भवनों का निर्माण कराने का आदेश दिया। एक स्कूल के लिए और दूसरा शिक्षक के आवास के लिए।

शीघ्र ही गांव वालों ने कंकड़ मिट्टी से बनी दीवारों और पटरी की छतों वाले दो भवनों का निर्माण कार्य पूरा कर दिया। मैदानी क्षेत्र के एक युवा आसामी मास्टर बाबू एक दिन गांव में पहुंच गए और अभिभावकों ने हर घर से कम से कम एक बच्चे को विद्यालय भेजने के **बोर साहब** के आदेश को पूरा करते हुए, अपने एक लड़के को अनिच्छापूर्वक स्कूल में डाल दिया।

स्कूल खुलने के साथ ही मास्टर साहब द्वारा स्कूल में लाई जाने वाली अजीब-अजीब चीजें गांव वालों को देखने का मौक़ा मिला जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थीं। रंगीन चित्रों वाली किताबें, मानचित्र, बच्चों के लिए चमड़े की गेंद, गाने वाली एक मशीन आदि अनोखी चीजें उन्होंने देखीं लेकिन कोई भी व्यक्ति इस दर्पण नामक अनोखी वस्तु का पता तब तक नहीं लगा सका, जब तक कि **लेदन** ने संयोगवश इसे देख नहीं लिया।

तब से जिज्ञासु गांव वालों को वह वस्तु दिखाना मास्टर बाबू का हर रोज़ का कार्य हो गया था, जो उनके आंगन में रोज़ाना इकट्ठा हो जाते थे। साधारण ग्रामीणों के लिए दर्पण में प्रतिबिम्ब, उनकी अपनी प्रतिमूर्ति देखने का यह पहला अवसर था, जो भिन्न व्यक्तियों की भिन्न छवि अंकित करता था। उनमें से कुछ लोगों के लिए उनका चेहरा ख़ूबसूरत और आकर्षक था तो दूसरों के लिए यह कुरूप और घृणास्पद था।

जिन्हें अपना चेहरा ख़ूबसूरत लगता था, वो मास्टर बाबू के यहां बार-बार आते थे और उनसे दर्पण देखने देने के लिए प्रार्थना करते थे। दर्पण देखने वाले चेहरे की नक़ल करते और अपनी शरारत पर ख़ूब हंसते थे। उस समय, दर्पण को पहले पकड़ने को लेकर या किसी एक व्यक्ति द्वारा ज़्यादा समय लेकर दूसरों को वंचित करने पर उनमें आपस में लड़ाई हो जाती थी।

शुरू में तो जिज्ञासु गांव वालों की इन गतिविधियों से मास्टर बाबू का ख़ूब मनोरंजन हुआ लेकिन धीरे-धीरे उन्हें परेशानी होने लगी क्योंकि गांव वालों का उनके यहां आने का कोई नियत समय नहीं था। गांव वाले सुबह से शाम तक किसी भी समय आ जाते थे। आख़िरकार उन्हें गांव वालों की भीड़ को नियन्त्रित करने के लिए **गाओन बुराह** (गांव-बूढ़े) से कहना पड़ा और दर्पण देखने के लिए रविवार की दोपहर का समय नियत किया गया।

जैसे-जैसे दिन गुज़रते गए, वैसे-वैसे आने वालों की संख्या भी घटती गई। गांव से दूर देवदार के जंगल के बीच स्कूल के अहाते के अन्दर मास्टर बाबू अकेलापन का अनुभव करने लगे। विशेषकर छुट्टी के दिनों में विद्यालय का अहाता उजाड़ लगता था।

ऐसे ही एकाकीपन के दिनों में मास्टर बाबू ने अहाते के बाहर इंतज़ार करती एक लड़की को देखा। लड़की जवान और अच्छे रूप वाली थी जैसाकि उसने ठोढ़ी पर गिरने वाले बालों की आड़ में चेहरे को छिपा रखा था। गांव में रहने वाली जनजाति **शरदुकपेन** की कुंआरी और अविवाहित लड़कियों द्वारा अपने चेहरे को बाल से ढंकने की परम्परा है। केवल शादी के बाद और पहली बार एक समारोह में, औरत के बालों को पीछे की ओर बांधा जाता है।

लड़की अकेली थी। उसकी पीठ पर जलावन की लकड़ी ढोने की बांस की टोकरी थी, जिसमें एक चाकू और एक कुल्हाड़ी रखी थी, जो काटे हुए गन्ने की पट्टी (फीते) से उसके कंधे पर कसकर बंधी हुई थी। मास्टर बाबू ने उसे स्कूल के, पत्थर से बनी अहाते की दीवार के बाहर पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा देखा था। उस लड़की के अजीब बरताव ने उनके दिमाग़ में उत्सुकता जगा दी और उन्हें लड़की के पास खींच ले आया।

"तुम यहां क्यों खड़ी हो?" मास्टर बाबू ने उसके पास पहुंचकर पूछा। वह लड़की **वांगडान**, अपनी जड़ता से विचलित हुई लेकिन एक शब्द भी नहीं बोली। उसे पता नहीं था कि वह दर्पण देखने के लिए मास्टर बाबू से कैसे प्रार्थना करे। पहले दिन ही **वांगडान** को उस अनोखी वस्तु के बारे में पता चल गया था, जिसमें कोई भी अपना प्रतिबिम्ब स्पष्ट देख सकता था। उसकी मौसी **लेदन** ने सहानुभूति जताते हुए उसे विश्वास दिलाया था कि, "तुम किसी समय इस संसार की सबसे ख़ूबसूरत लड़की थी लेकिन उस बदमाश **छिम्बू** ने तुम्हारे चेहरे को कैसा कुरूप कर दिया था। जाओ और मास्टर बाबू के घर के उस दर्पण में ख़ुद को देखो, तुम्हें अपने प्रेमी (रोमियो) की निर्दयता के बारे में स्वयं पता चल जाएगा।"

जी हां, **वांगडान** अच्छी तरह जानती थी कि एक आदमी कितना निर्दयी हो सकता है। उसने अपने छोटे से जीवन में जितनी यातनाएं झेली थीं, उतनी शायद इस संसार में किसी ने भी नहीं झेली होंगी। महज़ तीन साल पहले तक वह स्फूर्ति और उत्साह से भरी हुई एक ख़ुशमिजाज़ युवा लड़की थी, जिसकी सभी प्रशंसा करते थे और प्रेम भी। एक सीमा तक उसे भी अपनी सुन्दरता पर घमंड था और गांव के सारे **रोमियो** उसका ध्यान आकर्षित करने की फिराक़ में, उसके आस-पास मंडराते रहते थे। वे बहुत ही उत्सुकता से उसकी एक दृष्टि या मुस्कुराहट की अपेक्षा रखते थे लेकिन उसने कभी उन्हें सन्तुष्ट होने का अवसर नहीं दिया।

किशोरावस्था के साथ उसकी सुन्दरता वसन्त में खिलने वाले **रोडोडेण्ड्रन** (फूल) की तरह पूर्ण रूप से खिल गई। **वांगडान**, नदी के किनारे पत्थरों पर बैठकर पानी की बहती धारा में अपने कांपते, हिलते-डुलते प्रतिबिम्ब को देखा करती थी। वह

नैतिक रूप से मज़बूत लड़की थी, जो गांव के युवकों के सारे कुप्रयासों को निष्फल कर देती थी।

वांगडान गांव के युवकों में **छिम्बू** से सबसे ज्यादा नफ़रत करती थी, क्योंकि वह गुण्डा, दुस्साहसी और निर्दयी भी था। जिस दिन **वांगडान** अपने पहले रजस्राव के साथ औरत बनी तो उसकी सहेलियों ने उसे सहारा देकर संभालते हुए नदी किनारे ले जा कर बिठा दिया। फिर उसके सिर पर पानी छिड़का और बालों में कंघी करके इस तरह संवारा कि ख़ूबसूरत चेहरा बालों से ढंककर और ज़्यादा रहस्यमय एवं आकर्षक बन गया।

उस दिन के बाद से वह न केवल सौंदर्य के लिए सराही जाने लगी बल्कि लालसा की एक वस्तु भी बन गई। उसकी मुसीबत तब और भी बढ़ गई जब कई घरों से उसके लिए प्रस्ताव आने लगे और वह इन्कार नहीं कर सकी। उसे अपने मामा के घर से आए अपने ममेरे भाई के प्रस्ताव के लिए अपने माता-पिता को अपनी सहमति देनी पड़ी क्योंकि उसके ऊपर परिवार की परम्परा को बरक़रार रखने का दायित्व था।

जब **छिम्बू** को इसके बारे में पता चला तो वह गुस्से में भड़क उठा और एक रात जब वह अपनी बहन के साथ चूल्हे के पास सो रही थी, तब उसने उस पर हमला कर दिया। **वांगडान** ने महसूस किया कि कोई भारी चीज उसके शरीर पर रेंग रही है और उसके कपड़े उतारने का प्रयास कर रही है। अचानक आतंकित होकर उसने अपनी पूरी ताकत से उसे धक्का दिया। एक क्षण के लिए जो आदमी उसके ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रहा था, पीछे की तरफ गिर पड़ा लेकिन तुरन्त ही वह संभल गया और **वांगडान** पर और अधिक बर्बरता से टूट पड़ा।

उसके निर्दयी हाथों ने उसके बालों को कसकर पकड़ लिया और उसके चेहरे को चूल्हे के दहकते अंगारों पर कुछ समय के लिए रख दिया। **वांगडान** बेहोश हो गई। जब उसे होश आया तो उसे अत्यधिक पीड़ा हो रही थी और उसके माता-पिता, भाई-बहन आंखों में आंसू लिए उसे घेरकर खड़े थे। वह आग से तो बच गई लेकिन एक आंख गंवा बैठी। जले हुए मांस ने उसके चेहरे को विकृत कर दिया और जिस सुन्दरता के लिए वह विख्यात थी, उसका रंच मात्र भी शेष न रहा। वे लड़के जो उसके पीछे लगे रहते थे, अब उसमें कोई दिलचस्पी नहीं लेते थे। अब वह गांव में सहानुभूति का पात्र बनकर रह गई थी।

वांगडान कई बार मास्टर बाबू के पास जाना चाही लेकिन वह ऐसा करने का साहस नहीं जुटा सकी। जब उसे पता चला कि अब लोग मास्टर बाबू के घर नहीं जाते, तो उसने इसे अच्छा अवसर समझा क्योंकि वह अब गांव वालों की नज़रों से दूर अकेले अपना प्रतिबिम्ब देख सकती थी।

वांगडान ने फिर मास्टर बाबू की आवाज़ सुनी। बड़ी कठिनाई से उसने अपनी हथेली को अपने चहेरे के सामने उठाकर इशारा किया, जैसा कि उसकी मौसी लेदन ने दर्पण देखने की इच्छा व्यक्त करने के लिए सिखाया था। मास्टर बाबू समझ गए और उन्होंने उसे अपने पीछे आने के लिए कहा। घर के अन्दर पहुंचकर मास्टर बाबू ने उसे दर्पण थमा दिया। कुछ समय तक तो वह दर्पण को घूरती रही। फिर उसने धीरे-धीरे अपने बालों को चेहरे से हटाया और काफी देर तक अपने कुरूप चेहरे को देखती रही।

मास्टर बाबू भी उसका चेहरा देखने को इच्छुक थे और बाहर छिपे बैठे थे। मास्टर बाबू ने उसके चेहरे को देखा। वे ऐसे भयभीत हो गए, जैसे चित्रों वाली कहानी की किताबों की चुड़ैल के साक्षात दर्शन हो गए हों। अगले ही क्षण उन्होंने लड़की को बेसब्री से दर्पण को छाती से लगाकर सिसकते देखा। मास्टर बाबू दरवाज़े पर अवाक् खड़े थे। उनके दिल में करुणा की लहर दौड़ गई लेकिन दुख-दर्द से सिसकती उस अनजान लड़की को तसल्ली देने के लिए उनके पास शब्द नहीं थे।

कुछ समय बाद लड़की की सिसकियां कम हुईं। वह उठी, दर्पण वापस मास्टर बाबू को दिया, अपनी टोकरी उठाई और धीरे-धीरे जंगल की तरफ चली गई।

मास्टर बाबू बहुत देर तक अपने कमरे में खड़े उस लड़की की दुर्दशा के बारे में सोचते रहे। मास्टर बाबू समझ गए कि निश्चित रूप से वह एक ख़ूबसूरत लड़की रही होगी वरना इस कदर दुखी होकर नहीं रोती। उन्होंने अपना ध्यान दूसरी चीज़ों में लगाना चाहा लेकिन उनके दिमाग में बार-बार वही कुरूप चेहरा और कानों में सिसकियों की आवाज़ आती रही। लगभग एक घंटा बाद मास्टर बाबू ने बाहर किसी को चिल्लाते हुए सुना।

वह अपने कमरे से बाहर गए और एक घबराए हुए लड़के को देखा, जो जंगल की तरफ इशारा करके कुछ बुदबुदा रहा था। लड़के ने मास्टर बाबू को इशारे से अपने पीछे आने को कहा। वे लड़के के पीछे-पीछे जंगल की तरफ गए। जंगल में पहुंचकर मास्टर बाबू ने एक लड़की के शरीर को देवदार की शाखा से लटकते हुए देखा। यह वही लड़की **वांगडान** थी, जो अपने कुरूप चेहरे को आईने में देखने के बाद कुछ देर पहले सिसकती हुई मास्टर बाबू के घर से निकली थी।

मास्टर बाबू स्तब्ध रह गए। वे घोर पश्चाताप में डूबे, वहीं खड़े-खड़े उस अभागिन की लाश को फटी आंखों से देखते रह गए!